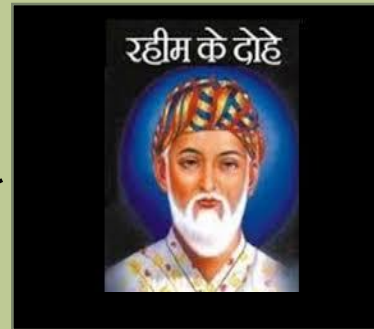




अब्दुल रहीम खानखाना का जन्म 17 दिसम्बर 1556 को लाहौर में हुआ। यह अकबर के दरबार के नवरत्नों में से एक थे।

दोहा अर्द्धसम मात्रिक छंद है। यह दो पंक्ति का होता है इसमें चार चरण माने जाते हैं।

रहीम अपने दोहों में ज्ञान और नीति की बात करते हैं

थोथे बादलों के द्वारा बताया है पिछले समय की बड़ी-बड़ी बातें करने रहने का कोई मूल्य नहीं होता है हमें वर्तमान में जीना चाहिए।

अपने दोहों में रहीम जी ने जीवन की सच्चाई को स्पष्ट किया है।

उचित समय और उचित स्थान पर उचित कार्य करने की कला को नीति कहते हैं।

धरती का उदाहरण देकर हर परिस्थिति में समान रहने का सन्देश दिया है।

धनवान होने पर सभी हमारे मित्र बनते हैं लेकिन सच्चा मित्र वही है जो विपत्ति में साथ दे।

मछली और जाल के उदाहरण से सच्चे प्रेम के बारे में बताया है।

वृक्ष के उदाहरण से समझाया है कि सज्जन व्यक्ति अपने संचित धन का उपयोग केवल अपने लिए नहीं करते, वो उस धन से समाज सेवा करते हैं।